Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Volume - 5, Issue - 2, FEB - 2022 Publication Date: 28/02/2022

DOIs:10.2018/SS/202202002 --:-- Research Article

डॉ. रामकुमार घोटड़ की लघुकथाओं का सामान्य परिचय

शिवराज

शोधार्थी ,पी.एच.डी, हिन्दी, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, धारवाड़, कर्नाटक,भारत
Email: shivrajjnv1982@gmail.com

सारांश- हिन्दी लघुकथाकारों में डॉ. रामकुमार घोटड़ जी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। इन्होंने समाज की लगभग सभी समस्याओं पर लघुकथाएँ लिखी हैं। इन्होंने समाज के हर वर्ग का चित्रण अपनी लघुकथाओं में किया है। इनके द्वारा रचित सभी लघुकथाओं में समाज के विभिन्न विषयों प्रकाश डाला गया है।

शोध कुंजी- लघुकथाओं में अभाव और विपन्नता, भ्रूण हत्या, नारी उत्थान, दलित समाज ।

1. परिचय :

डॉ. रामकुमार घोटड़ स्वतन्त्र विचारक, परिश्रमी, धुन का पक्का, लगन का कड़ा इत्यादि विशेषताओं के धनी हैं। इनका जन्म मार्च, 1953 को गाँव भैंसाली, तहसील राजगढ़, जिला चुरु (राजस्थान) में हुआ था। इनके पिता का नाम श्योदानराम घोटड़ और माता का नाम श्रीमती दड़का देवी है। इनके बचपन का नाम सुबे सिंह था जो बाद में परिवर्तित होकर रामकुमार हो गया। इनका विवाह हरियाणा राज्य में हुआ है।

डॉ. रामकुमार घोटड़ का सन् 1947-48 में प्रशिक्षण के लिए अध्यापक पद के लिए चयन हो गया था। डॉ. घोटड़ जी की लेखन के प्रति रुचि बचपन से ही थी। स्कूली शिक्षा के दौरान ये कुछ न कुछ लिखते रहते थे और विद्यालय के कार्यक्रमों में उसकी प्रस्तुति भी देते रहते थे। कईं उपन्यासों को पढ़ने के बाद आपमें इच्छा जागृत हुई कि उपन्यास लिखा जाए। यह सोचकर दसवीं-ग्यारहवीं की परीक्षा के बाद छुट्टियों में आपने उपन्यास लिखना आरम्भ किया। इन्होंने दो उपन्यास ' एक कदम दो पैर ' और ' भटकते भंवरे ' शीर्षक से लिख डाले। इन्होंने कॉलेज शिक्षा के दौरान एक लघु आकारीय रचना ' एक और आदर्श ' शीर्षक से लिखी जो कि सन् 1974 में कॉलेज पत्रिका में प्रकाशित हुई। यह प्रकाशित होने वाली इनकी प्रथम रचना थी। इसके पश्चात् एम.बी.बी.एस. चिकित्सीय काल में इन्होंने समय-समय पर कुछ रचनाएँ लिखी जो मेडिकल कॉलेज मेगजीन मं प्रकाशित हुई।

सन् 1984 में एक और लघु आकारीय रचना ' जिन्दगी ' शीर्षक से इन्होंने लिखी। यही इनकी प्रथम लघुकथा है। आरम्भिक दौर में लिखी गई इनकी लधुकथाएँ अधिकतर प्रतीकात्मक रही। डॉ. रामकुमार घोटड़ ने 20वीं सदी में लगभग 150-200 लधुकथाएँ लिखी, जिनमें कुछ ऐसी लघुकथाएँ भी थी जो अभ्यास मात्र लेखन था। जो स्तरीय व पठनीय नहीं बन पायी। जो लघुकथाएँ इन्हें स्तरीय लगी उन्हें यदा-कदा पत्र-पत्रिकाओं में भेजते रहे। इस प्रकार कुल मिलाकर इनकी एक सौ के लगभग लघुकथाएँ राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न पत्रिकाओं व लघुकथा संकलनों में प्रकाशित हुई। इन्होंने अपनी 155 लघुकथाएँ, बीसवीं सदी की मेंरी लघुकथाएँ नाम पुस्तक में संग्रहित की जो कि पूर्व में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी थी।

इनकी लघुकथाओं का सामान्य परिचय इस प्रकार हैं-

1 अभाव और विपन्नता की लघुकथाएँ :

डॉ. रामकुमार घोटड़ ने अपनी लघुकथओं में गरीबी का जीवन जी रहे व्यक्यिों के अभावों, मजबूरियों और समस्याओं का पूरी संवेदना, मार्मिकता और संजीदगी से चित्रण किया है। इनकी अभाव और विपन्नता की कुछ लघुकथाएँ इस प्रकार हैं-

1.1 पेन्ट की सिलाई –

प्रस्तुत लघुकथा के माध्यम से लेखक ने परिवार की निर्धनता का चित्रण किया गया है जो बहुत मार्मिक है।

1.2 पल-पल जीवन -

इस लधुकथा के माध्यम से एक गरीब परिवार की आर्थिक स्थिति का चित्रण किया गया है। कथानक के अनुसार एक गरीब पिता अपनी बेटी के लिए स्कूल ड्रेस और किताबों की व्यवस्था नहीं कर पाता। अंततः वह अपना रक्त बेचता है और उससे

मिले पैसों से बेटी के लिए ड्रेस व किताबों की व्यवस्था करता है। खून देने से उसमें कमजोरी आ जाती है और उसकी मृत्यु हो जाती है।

1.3 खुशनसीब -

इस लघुकथा में दो मित्रों के मध्य संवाद के माध्यम से गरीबी के कारण आत्महत्या करने का चित्रण किया गया है। पहला मित्र कहता है कि गरीबी व भुखमरी से तंग आकर मेरे माता-पिता ने उसके साथ ही नदी में छलांग लगा दी। वे दोनों तो मर गए लेकिन लोगों के प्रयास से वह बच गया। दूसरा मित्र कहाता है कि तूं खुशनसीब है जिसने अपने माता-पिता को देखा है और उसने तो अपने माता-पिता को देखा तक नहीं।

1.4 रोटी -

इस लघुकथा के माध्यम से लेखक ने रोटी को प्रतीक बनाकर मानवीय जीवन संघर्ष और एक भिखारी को भीख न मिलने पर उसकी मजबूरी का दैनीय चित्रण किया गया है। इस प्रकार इनकी लघुकथाओं में मानव जीवन की विभिन्न विपन्नताओं और त्रासदियों को उजागर किया गया है।

2 आजाद भारत की लघुकथाएँ :

डॉ. रामकुमार घोटड ने लिखा है कि आजादी के बाद लघुकथाओं में समकालीन यथार्थ की अभिव्यक्ति के साथ-साथ सामाजिकता को सकारात्मक सामाजिक उद्देश्यों की ओर प्रवृत्त करने की लघुकथा साहित्य भरपूर क्षमता रखता है। सन् 1942 में अंग्रेज भारत छोड़ो नारे प्रसिद्ध थे और आज नेताओं कुर्सी छोड़ो प्रसिद्ध हैं। अनुमान विगत पचास वर्षों में स्थितियाँ लगभग वैसी ही हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् की लघुकथाओं में राजनीतिक जीवन की विसंगतियों का ही चित्रण अधिक देखने में मिलता है। आजाद भारत की लघकथाओं में डॉ. रामकुमार घोटड़ की निम्नलिखित लघुकथाएँ प्रसिद्ध हैं-

2.1 समय का फेर -

प्रस्तुत लघुकथा में माध्यम से लेखक ने समय की महत्ता को रेखांकित किया है। कथानक के अनुसार एक नवाब साहब आजादी से पूर्व ठाठ-बाट से रहते थे। लेकिन आजादी के बाद समय बदल गया और समय के साथ ही दौलत भी जाती रही। उसे अपनी बेटी की शादी के लिए एक जागीरदार से धन उधार लेना पड़ता है।

2.2 सिंहासन -

इस लघु कथा के माध्यम से जनता को जागरुक बनने के लिए प्रेरित किया गया है। कथानक के अनुसार एक मंत्री जी अपने देहाती मित्र को सभ्य समाज के तौर-तरीके , रहन-सहन और बोलने का सलीका सीखने के लिए प्रेरित करते हैं। अंत में मंत्री जी का दोस्त उनसे कहता है कि हम लोग जैसे हैं वैसे ही रहने दें वरना जिस दिन हम सभ्य समाज के तौर-तरीके सीख गए उस दिन आपका सिंहासन डोल जाएगा।

2.3 मरते दम तक -

इस लघुकथा में एक ऐसे नेता के चरित्र को रुपायित किया गया है जिसको कुर्सी व वोट से बहुत प्रेम है। कथानक के अनुसार गाँव के एक विपक्षी नेता को सिक्कों से तोला जाता है जो दूसरे नेता को सहन नही हुआ और वे बेहोश हो जाते हैं। इस लघुकथा के माध्यम से आज के नेताओं के लालची चरित्र पर करारा व्यंग्य किया गया है।

3 शहीदों के परिवार का जीवन चित्रण :

डॉ. रामकुमार घोटड़ ने अपनी लघुकथाओं में शहीदों के परिवार के कष्टमय जीवन का भी पर्याप्त चित्रण किया है। शहीद पति की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी के कष्टपूर्ण जीवन का मार्मिक वर्णन इनकी लघुकथाओं में किया गया गया है। परिवार का कोई व्यक्ति देश के लिए शहीद होता है तो उसके परिवार पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ता है। परिवार की एक मात्र आय का साधन खत्म हो जाता है। परिवार का पालन-पोषण करना मुश्किल हो जाता है। इन सारी मुश्किलों और कष्टों का चित्रण डॉ. रामकुमार घोटड़ ने बखूबी अपनी लघुकथाओं में किया है।

4 प्रतिनिधि लघुकथाएँ :

कहानी कहने की परम्परा हमारे यहाँ अनन्त काल से चली आ रही है। प्राचीनकाल से ही यह भावना रही है कि कहानियों या कथाओं को केवल मनोरंजन का साधन मात्र न समझा जाए। लघुकथा का मतलब छोटी कहानी नही होता है। छोटी कहानी लघुकथा हो सकती है, जिसमें लघु और कथा के बीच एक खाली स्थान होता है। लघुकथा छोटी कहानी का अति संक्षिप्त रुप होता है।

डॉ. रामकुमार घोटड़ ने अपनी प्रतिनिधि लघुकथाओं में नेताओं के कुर्सी प्रेम, भीख मांगने, गरीबी, राजनेताओं के झूठे आश्वासनों घोर भ्रष्टाचार तथा मानवीय जीवन संघर्ष का पर्याप्त चित्रण किया है। इस प्रकार की इनकी कुछ लघुकथाएँ इस प्रकार हैं-

4.1 कुर्सी का मोह -

इस लघुकथा में एक बच्चे के माध्यम से नेताओं के कुर्सी प्रेम पर चुसकी ली गई है। कथानक के अनुसार अस्पताल में एक बच्चा जन्म लेता है। जन्म लेते ही वह रोने लगता है और चुप होने का नाम ही नही लेता। उसे चुप कराने के सारे पर्यत्न असफल हो

जाते हैं। तभी स्टाफ नर्स ने उस बच्चे को कुर्सी पर लेटा दिया और वह चुप हो गया। तब डॉ. ने पूछा कि यह कैसे हुआ तो नर्स ने कहा कि यह पिछले जन्म में नेता रहा होगा। इसलिए कुर्सी पर लेटाते ही चुप हो गया। इस प्रकार नेताओं के कुर्सी प्रेम पर करारा व्यंग्य किया गया है।

4.2 एक युद्ध यह भी -

डॉ. रामकुमार घोटड़ की यह लघुकथा दलित संदर्भ चेतना को प्रतीक रुप में उभारते हुए सवर्णों की संकीर्ण मानसिकता पर छिंटाकशी करती है।

4.3 शक्तिमान -

इस लघुकथा के माध्यम से लेखक ने राजनेताओं द्वारा दिए जाने वाले झूठे आश्वासनों को केन्द्र में रखकर उन पर सटीक व्यंग्य किया है। आजकल के स्वार्थी नेताओं की राजनीतिक सोच का स्पष्ट चित्रण उक्त लघुकथा में किया गया है।

5 दलित समाज की लघुकथाएँ

दलित संवेदना को उकेरने का कार्य लगभग साहित्य की हर विधा में किया जा रहा है। लघुकथाओं की बात करें तो राजेन्द्र यादव की 'दो दिवंगत' तथा रजनी गुप्ता की 'गठरी' महत्वपूर्ण प्रारंभिक दलित संवेदना की लघुकथाएँ हैं।

डॉ. रामकुमार घोटड़ ने अपनी लघुकथाओं में दलित समाज, दलित विमर्श, संघर्ष व शोषण की अभिव्यक्ति की है। डॉ. घोटड़ की लघुकथाओं में दलितों के विभिन्न कष्टों व दुःखों को सहन करने का प्रयास किया गया है। इन्होंने समाज में व्याप्त छूआछूत की समस्या का भी पर्याप्त चित्रण अपनी लघुकथाओं में किया है। इनकी इस प्रकार की कुछ लघुकथाएँ निम्नलिखित हैं-

5.1 खार-खखार -

प्रस्तुत लघुकथा में माध्यम से लेखक ने सवर्ण जाति के स्वार्थ, पाखण्ड और दलितों के प्रति उनकी नफरत को दृढ़ता के साथ उभारा है।

5.2 बंद दरवाजा -

इस लघुकथा में दर्शाया गया है कि लोग एक दूसरे की मदद करने में भी जात-पात के कारण संकोच करते हैं। दूसरी जाति वाले को पानी पिलाना भी पाप समझा जाता है।

5.3 समझदारी –

इस लघुकथा के माध्यम से समाज में व्याप्त जाति-भेदभाव की भावना को दर्शाया गया है। जाति भेद के कारण छोटी जाति के लोगों को ऊँची जाति वाले अपने घर में नौकर भी नहीं रखते। नौकर रखने के लिए भी जात-पात देखी जाती है।

6 किन्नर समाज की लघुकथाएँ :

हमारे समाज का ताना-बाना आदमी और औरत से मिल कर बना है लेकिन तीसरा जेण्डर भी हमारे समाज का हिस्सा है। जिसको हमारे समाज में अच्छी नजर से नहीं देखा जाता। इस वर्ग को थर्ड़ जेण्डर, किन्नर या हिजड़े के नाम से जाना जाता है। डॉ. रामकुमार घोटड़ ने किन्नर समाज के कष्टों और समाज में इनकों मिलने वाले अनादर का चित्रण अपनी लघुकथाओं में किया है।

लाल बुझक्कड़ इनकी इसी प्रकार की लघुकथा है।

7 भ्रूण हत्या तथा लड़का लड़का-लडकी के भेदभाव पर आधारित लधुकथाएँ :

मानव जीवन ईश्वर की देन है। इस संसार में जो भी आता है वह परमात्मा की इच्छा से आता है और उन्हीं की इच्छा से जाता है। इसी समाज में ऐसी मानसिकता वाले लोग भी हैं जिन्होंने स्त्री पुरुष में भेद कर भ्रूण हत्या को बढ़ावा दिया है। कन्या भ्रूण हत्या मानवता और विशेष रुप से स्त्री जाति के विरुद्ध सबसे जघन्य अपराधा है। डॉ. रामकुमार घोटड़ ने कन्या भ्रूण हत्या पर बहुत कुछ लिखा है। उन्होंने भ्रूण हत्या और लड़का-लड़की के भेदभाव को लेकर कुछ लघुकथाएँ भी लिखी हैं जो इस प्रकार हैं-

7.1 गर्भपात -

इस लघुकथा के माध्यम से लेखक ने दर्शाया है कि किस प्रकार एक औरत चौथी बार गर्भपात करवाने डॉक्टर के पास आती है और डॉक्टर के समझाने पर उसे स्वयं से गलानी होने लगती है और घर को लौट जाती है।

7.2 बुढ़पे का सहारा -

इस लघुकथा में माध्यम से समाज में व्याप्त लड़का-लड़की के भेदभाव की भावना को दर्शाया गया है।

7.3 लड़की ही अच्छी -

इस लघुकथा के माध्यम से लेखक ने लड़की की महत्ता और आवश्यकता पर बल दिया गया है। परिवार में कम से कम एक लड़की अवश्यक होनी चाहिए।

8 नारी उत्थान की लघुकथाएँ :

नारी समाज में उत्थान का तात्पर्य है उसके प्रति निरंकुषता, क्रूरता, अमानवीय व्यवहार से नारी को मुक्ति मिले। डॉ. रामकुमार घोटड़ ने अपनी लघुकथाओं में नारी संघर्ष, शोषण और भेदभाव की भावना का पर्याप्त चित्रण किया है। डॉ. घोटड़ ने

अपनी लघुकथाओं में नारी जीवन से जुड़े हुए विभिन्न आयामों को पाठक के समक्ष पेश किया है। किस प्रकार एक लड़की जन्म से अपने पिता और पति के घर पर अनेक कठिनाईयों का सामना करती है और समाज में नारी की वास्तविक स्थिति का चित्रण किया है। इनकी लघुकथाओं में नारी को सहनशीलता की मूर्ति तथा अंत समय तक अपनी इच्छाओं का दमन करने वाली दिखाया गया है। स्त्रियाँ किस प्रकार दहेज के लिए प्रताड़ित की जाति हैं तथा विधवा नारियों को परम्परागत रुढ़ियों के कारण उनके जीवन में आने वाली परेशानियों का भी पर्याप्त वर्णन इनकी लघुकथाओं में किया गया है। इस प्रकार की कुछ लघुकथाएँ निम्नलिखित हैं-

8.1 अहम् को झोंका -

इस लघुकथा में सास और बहु के बीच सास का अहम् दिखाई देता है और बहु निर्बल प्रतीत होती है। एक सास यह कदापि सहन नहीं कर पाती की उसकी बहू उससे ऊँचे पद पर जाए।

8.2 औरत की भूख –

इस लघुकथा में दर्शाया गया है कि किस प्रकार एक नारी अपने परिवार को खाना खिलाकर अंत में जो भोजन बच जाता है उसी को खाकर प्रसन्न रहती है। यहाँ अपने परिवार के प्रति एक औरत के त्याग की भावना को दर्शाया गया है।

8.3 कुंआरेपन की सजा -

प्रस्तुत लघुकथा एक ऐसी मजबूर लड़की की कहानी है जिसकी शादी अन्यान्य कारणों से नहीं हो पाती और वह बहकावे में आकर नाजायज संबंध स्थापित कर लेती है और अंत में अपने गर्भ में पल रहे बच्चे सहित आत्महत्या कर लेती है।

8.4 मां की ममता -

प्रस्तुत लघुकथा एक मजबूर और गरीब नारी की कहानी है जिसमें वह दूसरों के घर में खाना बनाकर और दूसरों के कपड़े सिलकर अपना व अपने बच्चों का पालन-पोषण कर रही है।

8.5 बड़ी बहू -

प्रस्तुत लघुकथा में एक परिवार की सास और दो बहुओं के माध्यम से दर्शाया गया है कि बहू को भी अपनी बेटी के समान समझना चाहिए तभी वह अपनी सास को माता का दर्जा दे पाएगी।

9 बुजुर्ग जीवन शैली की लघुकथाएँ

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। समय के चक्र के साथ मानव जीवन भी परिवर्तित होता रहता है। जो आज शिशु है वह कल व्यस्क होगा और फिर व्यस्क से वृद्ध। डॉ. रामकुमार घोटड़ की लघुकथाओं में बुजुर्ग जीवन शैली का सुन्दर चित्रण देखने को मिलता है। इनकी इस प्रकार की कुछ लघुकथाएँ इस प्रकार हैं -

9.1 रात ढले -

इस लघुकथा में लेखक ने घर-बार छोड़कर अन्यत्र पलायन करने वाले व्यक्तियों के वृद्ध माता-पिता की जीवन शैली का मार्मिक चित्रण किया गया है।

9.2 मोतिया बिन्द -

इस लघुकथा के माध्यम से लेखक ने वृद्ध पिता के त्याग और वर्तमान और भविष्य में झूलते पिता की स्थिति का सटीक चित्रण किया है।

9.3 गिरज कामले -

प्रस्तुत लघुकथा एक ऐसी बूढ़ी औरत की दास्तां हैं जो अपनी पेंशन से सभी के लिए कुछ न कुछ लाती है परन्तु परिवार का कोई भी सदस्य उसे डॉक्टर के पास तक नहीं लेकर जाता।

10 विधवा समस्या -

डॉ. रामकुमार घोटड़ ने विधवा समस्या को अपनी लघुकथाओं में बखूबी से चिख्त्रित किया है। आज के आधुनिक कहे जाने वाले समाज में विधवा स्त्रियों को परम्परागत रुढ़ियों और अंधविश्वासों के कारण अपने जीवन में भी अनेक मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। जिनके कारण उनका जीवन बद से बदतर होता जा रहा है। और वे भगवान से अपनी मौत की दुआ मांगती हैं। परन्तु मांगने से मौत भी नहीं मिलती। जब तक कि उसकी उम्र पूरी न हो जाएं विधवा होने के साथ ही समाज बुरी दृष्टि से नारी घिर जाती है और उम्र भर प्रताड़ित होती रहती है। " नारी संघर्ष- नारी के बारे में कहा गया है।

कोमल है कमजोर नहीं तू
शक्ति का नाम नारी है।"

"आँचल में है दूध आँखों में पानी,
अबला जीवन तुम्हारी, यही कहानी।"

इस प्रकार डॉ. रामकुमार घोटड़ की लघुकथाओं में समाज के हर वर्ग और हर समस्या का चित्रण किया गया है।

सन्दर्भ सूची:

1. डॉ. रामकुमार घोटड़ का व्यक्तित्व एवं कृतित्व पृ. 2.
2. लघुकथा सिद्धानत और कथ्य विश्लेषण पृ. 19,21,32.
3. लघुकथा उद्भव और विकास पृ. 26,32.
4. डॉ. रामकुमार घोटड की लघुकथाओं में विविध विमर्श/नारी विमर्श पृ. 73,74,76,78,81,86.
5. राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुपत पृ. 73.